

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA



नवकलेबर 2015
NABAKALEBARA 2015

श्री जगन्नाथ धाम, पुरी
SHRI JAGANNATH DHAM, PURI

विवरणिका BROCHURE



तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग Denomination	:	500 पैसा 500 p
मुद्रित डाक-टिकटें Stamps Printed	:	6 लाख 0.6 Million
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	:	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास हैं।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00

NABAKALEBARA 2015

The term **Nabakalebara** is an ancient ritual associated with Lord Jagannath Temple of Puri when the Idols of Lord Jagannath, Balabhadra, Subhadra and Sudarshan are replaced by a new set of Idols.

It is believed that a year which has two months (Adhikamasa) of Ashadha as per the Hindu Calendar is auspicious for conducting the ceremony. This usually occurs every twelve to nineteen years. The Deities are made from a special type of Neem wood known as Daru Bramha. Preparations for the ceremony start in the month of Chaitra. The last such ceremony took place in the year 1996. 2015 is the year when the ceremony will take place next.

Jirna Bera Parityaga literally means leaving the old deity and consecration of new one. As a person puts on new garments, giving up old ones, the soul similarly accepts new material bodies, giving up the old and useless ones.

The above philosophical view is applied to Shri Jagannath. According to different secret protocols followed from time immemorial in the temple, provision exists for changing of the deities. As the deities are made up of Neem tree basically, along with Musk, Sandalwood and many other rare combinations, they undergo change of *Vigraha* before the adhika ashaadha ends.

No ordinary Neem tree can be used to make the deities. Certain well defined criteria must be satisfied by the tree before it is labeled a Daru Bramha fit for making the deities. Locating the four holy trees requires divine intervention. As per long-standing tradition the Priests of the Jagannath Temple (Puri) worship Maa Mangala at the Kakatpur Mangala Temple. It is said the Goddess appears to them in their dreams revealing the location of the holy trees.

Puri geared up for Nabakalebara 2015 after the sacred trees were located. The trees are cut down after appropriate ritual observance and the logs are then

transported by small carts pulled by devotees all the way to the temple at Puri. Starting at an auspicious hour with the fullest of secrecy the logs are carved into deities within the Temple premises. On the midnight of Adhika Ashadha Krishna Chaturdashi the Tattva Padartha is transferred from the old deities to the new deities. Bramha or tattva padartha is a super natural thing. After this, the new deities are worshiped and the old deities buried in the sand, (Koili Baikuntha) inside the temple premises. Apart from the regulation associated with the selection of tree, there are various rituals associated with locating the same and bringing it to the temple premises.

Elaborate rituals, numerous myths and several celestial incidents are attached to this auspicious affair. The exact procedure of the transformation of images have been mentioned in the Sanskrit manuscripts written on palm leaves which are kept in the temple. Only the three head priests of the temple have the sole responsibility of reading and interpreting them.

On the morning of the second day the new deities are seated on the altar, the "Ratna-Singhasana". On this second day, the daily routine of the temple finally begins again, after a lapse of nearly 58 days. Sweet-smelling flower garlands and new garments are given to the new deities, food is offered, and puja is done. Devotees can again come inside for darshan. And on the third day the new deities emerge from the temple for the biggest Chariot Festival. The Nabakalebara draws millions of people from across the world to Puri, and is one of the biggest festivals in the country.

The Department of Posts is happy to release a commemorative postage stamp on the occasion of Nabakalebara, 2015.

Credits:-

Text : Based on the material provided by the proponent.
Stamp/FDC/ : Alka Sharma
Cancellation

नवकलेबर 2015

नवकलेबर (नवकालेबर), पुरी स्थित भगवान जगन्नाथ के मंदिर से संबंधित प्राचीन अनुष्ठान है। इसके अंतर्गत भगवान जगन्नाथ, बलभद्र, सुमद्रा और सुदर्शन की पुरानी प्रतिमाओं को हटाकर उनके स्थान पर नई प्रतिमाएं स्थापित की जाती हैं।

मान्यता है कि हिन्दू कैलेंडर के अनुसार जिस वर्ष में आषाढ़ के दो माह (अधिक मास) होते हैं, वह वर्ष इस अनुष्ठान के लिए शुभ होता है। यह संयोग हर 12 से 19 वर्ष में बनता है। देवताओं की प्रतिमाएं दारु ब्रह्म नामक विशेष किस्म की नीम की लकड़ी से बनाई जाती हैं। इस समारोह की तैयारियां चैत्र मास में आरंभ हो जाती हैं। पिछली बार इस समारोह का आयोजन वर्ष 1996 में किया गया था। इसके बाद अब इस वर्ष (2015 में) इस अनुष्ठान का होना निर्धारित है।

जीर्ण शेर परिव्याग का शाब्दिक अर्थ है पुरानी देव-प्रतिमा के स्थान पर नई देव-प्रतिमाओं की प्राण-प्रतिष्ठा। जैसे कोई व्यक्ति पुरानी पोशाकों को बदलकर नई पोशाक पहन करता है, उसी प्रकार आत्मा भी पुराने पड़ चुके शरीर को त्याग कर नई देह धारण करती है।

इसी दार्शनिक दृष्टिकोण का अनुपालन भगवान जगन्नाथ के लिए किया गया है। प्राचीन काल से ही इस मंदिर में अपनाए जाने वाले विभिन्न गुप्त विधि-विधानों के अंतर्गत देवताओं की प्रतिमाओं को बदलने का प्राबधान है। चूंकि ये प्रतिमाएं मुख्य रूप से नीम के अतिरिक्त कस्तूरी, चंदन तथा अन्य पदार्थों के दुर्लभ मिश्रण से निर्मित होती हैं, अतः अधिक आषाढ़ के समाप्त होने से पहले विशद परिवर्तन की आवश्यकता होती है।

देव-प्रतिमाओं के निर्माण में किसी भी साधारण नीम वृक्ष की लकड़ी का प्रयोग नहीं किया जा सकता। किसी भी वृक्ष को दारु-ब्रह्म घोषित करने और देव-प्रतिमाओं के निर्माण योग्य माने जाने से पूर्व वह अनिवार्य है कि वह वृक्ष कतिपय निर्धारित कसौटियों पर खरा उतरता हो। इस प्रकार के चार पावन वृक्ष वास्तव में दैवीय कृपा से ही प्राप्त होते हैं। प्राचीन परंपरा के अनुसार जगन्नाथ मंदिर (पुरी) के पुजारी काकतपुर मंगला मंदिर में मौं मंगला की आराधना करते हैं। मान्यता है कि पुजारियों की पूजा से प्रसन्न होकर मौं मंगला उन्हें स्थान में दर्शन देती है तथा इन पावन वृक्षों का पता बताती हैं।

इन पावन वृक्षों के मिलने के बाद ही पुरी में नवकलेबर 2015 की तैयारियों का शुभारंभ हुआ। समस्त विधि-विधानों से अनुष्ठान के पूरा होने के उपरांत नीम के इन वृक्षों को काटा जाता है और इनके टुकड़ों को छोटे

स्थानों पर सजाकर ले जाया जाता है। श्रद्धालु इन स्थानों को स्पर्श कर पुरी स्थित मंदिर तक लाते हैं। शुभ मुहूर्त में, मंदिर परिसर में पूर्णतः गुप्त विधि-विधान से, नीम के इन टुकड़ों को देवताओं का आकार प्रदान किया जाता है। अधिक आषाढ़ मास की कृष्ण चतुर्दशी की मध्यरात्रि को तत्व पदार्थ को पुरानी देव-प्रतिमाओं से नई देव-प्रतिमाओं में प्रतिष्ठापित कर दिया जाता है। ब्रह्म अथवा तत्व पदार्थ, पारलौकिक पदार्थ है। इस अनुष्ठान के पश्चात नई देव-प्रतिमाओं को मंदिर परिसर में बालू (फोइली बैकूठ) में समा दिया जाता है। नीम के पावन वृक्षों के घटन से संबंधित नियमों के अतिरिक्त, इन वृक्षों को खोजने और इनके टुकड़ों को मंदिर परिसर तक लाने से भी जुड़े विविध अनुष्ठान विद्यमान हैं।

विस्तृत अनुष्ठानों के अतिरिक्त अनेकों किंवदंतियां और विभिन्न दैवीय घटनाएं भी इस शुभ आयोजन से संबंधित हैं। प्रतिमाओं के परिवर्तन के संबंध में सटीक विधि का उल्लेख मंदिर परिसर में सुरक्षित रखे तात-पत्रों पर लिखित संस्कृत पाण्डुलिपियों में मिलता है। मंदिर के तीन प्रधान पुजारियों को ही इन पाण्डुलिपियों को पढ़ने और इनकी व्याख्या करने का दायित्व सौंपा गया है।

उत्सव के दूसरे दिन प्रातः काल नव प्रतिमाओं को 'रत्न-सिंहासन' पर स्थापित किया जाता है। लगभग 58 दिनों के अंतराल के बाद इसी दिन से मंदिर में पूजा-पाठ आदि के नित्य कार्य आरंभ हो जाते हैं। नई देव प्रतिमाओं को सुगंधित पुष्प मालाएं अर्पित की जाती हैं और इन्हें नई पोशाकों आदि से सुसज्जित कर भोग लगाया जाता है तथा पूजा-अर्चना की जाती है। इस दिन से श्रद्धालु दर्शन हेतु मंदिर में पुनः प्रवेश कर सकते हैं। तीसरे दिन विशालतम रथोत्सव के लिए नई देव प्रतिमाओं को मंदिर से बाहर लाया जाता है। नवकलेबर, देश के सबसे बड़े उत्सवों में से एक है और इसमें शामिल होने के लिए दुनिया भर से लाखों की संख्या में लोग पुरी पहुंचते हैं।

डाक विभाग, नवकलेबर, 2015 के उपलक्ष्य में एक स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आमार :-

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित
डाक-टिकट/ : अलका शर्मा
प्रथम दिवस आवरण/
विरूपण